PRESS INFORMATION BUREAU
पत्र सूचना कार्यालय
GOVERNMENT OF INDIA
भारत सरकार

Rashtriya Sahara, Delhi
Sat, 13 May 2017, Page 10
Width: 24.47 cms, Height: 32.29 cms, a3, Ref: 38.2017-05-13.90

हुए हैं क्रांतिकारी बदलाव

स्वच्छता मिशन

डॉ. बिंदेश्वर पाठक

साल 2014 से भारत में नए बदलाव की शुरुआत हुई है। प्रगति तो लगातार होती रही है, हर सरकार ने अपनी तरह से बदलाव लाने और देश को प्रगति की राह पर ले जाने में बड़ी भूमिका निभाई है। लेकिन 2014 का साल भारतीय इतिहास में बड़ा मोड़ बनकर आया। इस साल सत्ता संभालने के बाद प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने क्रांतिकारी बदलाव की शुरुआत की। यह बदलाव है देश को स्वच्छ बनाने की। स्वच्छ भारत अभियान और देश को खुले में शौच से मुक्त करने का क्रांतिकारी अभियान मोदी सरकार ने ही शुरू किया। चूंकि मैं खुद भी स्वच्छता अभियान से जुड़ा हूं, स्वच्छता और शौचालय क्रांति लाने में हमारे संगठन सुलभ इंटरनेशनल की भूमिका रही है, इसलिए मैंने स्वच्छ भारत अभियान को काफी नजदीक से देखा है।

प्रधानमंत्री ने 15 अगस्त, 2014 को स्वच्छ और स्वस्थ भारत का निर्माण करने के लिए आह्वान किया। आजाद भारत के इतिहास की यह पहली घटना थी, जब किसी प्रधानमंत्री ने लाल किले की प्राचीर से झंडा फहराते वक्त स्वच्छता और शौचालयों की बात की। इसकी ओर उन्होंने सारे राष्ट्र का ध्यान आकर्षित किया। देशभर के चार लाख पचास हजार स्कूलों में शौचालयों की व्यवस्था एक साल के अंदर कराने का वादा किया और सुखद आश्चर्य है कि यह कार्य एक साल के अंदर पूरा भी हो गया। नोबेल पुरस्कार विजेता ब्रिटिश उपन्यासकार वीएस नायपॉल ने अपनी पुस्तक 'एन एरिया ऑफ डार्कनेस' में खुले रूप में शौच करने की प्रथा का विस्तृत रुप से वर्णन किया है। इस प्रथा के रहने से भारत विदेशियों के बीच में एक मजाक का विषय बना रहता है। आजादी के बाद से ही केंद्र और राज्य-सरकारों ने खुले रूप में शौच करने की प्रथा को समाप्त करने का प्रयास किया। लेकिन इस कार्यक्रम में गति तब आई जब प्रधानमंत्री ने इस अस्वास्थकर परंपरा को 2019 तक समाप्त करने का आवाहन किया और यह भी कहा कि खुले रूप में शौच करने की प्रथा का अंत महात्मा गांधी के प्रति उनकी 150वीं वर्षगांठ पर सच्ची श्रद्धांजलि होगी। सारा देश इस लक्ष्य को पूरा करने में लगा हुआ है। प्रधानमंत्री ने मोहनजोदड़ो एवं हड़प्पा की स्वच्छता की संस्कृति का पुनर्जागरण किया है। गांधी जयंती पर 2014 में दिल्ली की सड़कों पर प्रधानमंत्री ने स्वयं झाड़ू उठाई। प्रधानमंत्री के इस कदम से देखते-ही-देखते पूरे देश के लोगों ने भी झाड़ू उठा लिया। सरकारी दफ्तरों, रेलवे-स्टेशनों, बस-स्टॉप, शहर की गलियां सभी साफ होने लगे। शिक्षक, छात्र-छात्राएं सबने यह कार्य अपने हाथ में ले लिया। सरकारी अधिकारी भी इस कार्य में जुट गए और हर स्थान पर सफाई

शुरू कर दी। शहरों की सफाई के सिलसिले में स्वच्छ शहर की घोषणा भी काम में आई और हर स्थानीय निकाय, नगर निगम, नगरपालिका भी अपने-अपने शहर की सफाई में लग गए। स्वच्छता क्रांति का आलम यह है कि गली, चौराहे, नुक्कड़-नाटक, सांस्कृतिक कार्यक्रम, लेखन प्रतियोगिता, चित्र प्रतियोगिता, हर तरह से स्वच्छता के प्रति जागरूकता लाने का प्रयास किया जा रहा है और सारे देश में स्वच्छता का वातावरण बन रहा है। इसका सारा श्रेय प्रधानमंत्री को जाता है।

सबसे ज्यादा बदलाव इन तीन सालों में छोटे-छोटे बच्चों में आया है। यह पीढ़ी ही जब आगे बढ़ेगी तो देश में स्वच्छता के प्रति नया वातावरण बनाएगी। जिसका असर बाद में कहीं और गहराई से देखा जा सकेगा। महात्मा गांधी ने स्वच्छ भारत की कल्पना की थी और कहा था कि स्वच्छ-भारत पहले चाहिए और स्वतंत्रता बाद में। महात्मा गांधी के इस सपने को प्रधानमंत्री पूरा कर रहे हैं। जब प्रधानमंत्री ने काशी के घाटों का मुआयना किया था तो सबसे गंदा अस्सी घाट था। जहां कई दशकों से मिट्टी जमा थी और लोग वहां स्नान नहीं कर पा रहे थे। प्रधानमंत्री जी ने फावड़े से स्वयं मिट्टी साफ करना शुरू कर दिया और सब लोग उनके साथ एकजुट हो गए। सुलभ-परिवार ने भी अस्सी-घाट को साफ करने का बीड़ा अपने सिर लिया और आज अस्सी-घाट काशी के सभी 84 घाटों में सबसे साफ है। इसके लिए प्रधानमंत्री ने सुलभ इंटरनेशनल को सफाईगिरी पुरस्कार से सम्मानित किया है।

भारतीय स्वच्छता की सबसे बड़ी समस्या यह है कि वह सार्वजनिक ज्यादा है। हर भारतीय अपना घर, अपना चूल्हा-चौका और अपना कमरा तो साफ रखना चाहता है, लेकिन उसकी प्रवृत्ति अपने कूड़े को गली में, सार्वजनिक जगहों पर फेंकने की रही है। स्वच्छ भारत अभियान और प्रधानमंत्री के कदम से सबसे बड़ा बदलाव इसी सोच में आया है। स्वच्छता संस्कृति से जुड़ा मामला है और संस्कृतियां दो या तीन साल में नहीं बदला करतीं। इनके बदलाव की गति धीमी होती है और इसे अरसे बाद ही समझा-देखा जा सकता है।

फिर भी यह मानना ही होगा कि प्रधानमंत्री ने खुद जो बीड़ा उठाया, उसका असर जल्द ही दिखने भी लगा है। गांधी जी ने स्वच्छता की संस्कृति को बदलने के लिए ही 1937 के चुनाव के बाद बनने वाली सरकारों के लिए स्कूली शिक्षा के पाठ्यक्रम में स्वच्छता को भी महत्त्वपूर्ण विषय के तौर पर रखा था। बेसिक शिक्षा के लिए उन्होंने डॉक्टर जाकिर हुसैन की अध्यक्षता में जो समिति बनाई, उसके लिए जो आधार पत्र गांधी जी ने लिखा, उसमें भी स्वच्छता पर जोर है। स्कूली शिक्षा में स्वच्छता को शामिल करना भावी नागरिक के निर्माण में बड़ी भूमिका निभाएगा। हमारा मानना है कि स्वच्छता को पाठ्यक्रम में शामिल किया जाएगा तो इसे लेकर जो जागरूकता बढ़ेगी, उसका अकादमिक आधार होगा। प्रधानमंत्री मोदी के तीन साल के कार्यकाल को स्वच्छता के नजरिए से देखें तो वह कामयाब ही माना जाएगा।

गांधी जी ने स्वच्छता की संस्कृति को बदलने के लिए ही 1937 के बाद वाली सरकारों के लिए शिक्षा पाठ्यक्रम में स्वच्छता को भी अहम विषय के तौर पर रखा था। बेसिक शिक्षा के लिए उन्होंने जाकिर हुसैन की अध्यक्षता में जो समिति बनाई, उसके लिए जो आधार पत्र गांधी जी ने लिखा, उसमें भी स्वच्छता पर जोर है। स्कूली शिक्षा में स्वच्छता को शामिल करना भावी नागरिक के निर्माण में बड़ी भूमिका निभाएगा